नींद

जिस नींद के साथ कभी बड़ी बनती थी मेरी,
आज उस नींद के साथ कुछ बनती ही नहीं मेरी ।

खुद बावरी जैसे पूरी रात घूमती रहती है यह नींद,
साथ ही मुझे भी परेशानी के कंधो में बिठाए घुमाती रहती है यह नींद।

कुछ नए कुछ पुराने दरवाजों पर दस्तक देती है,

और उनपे लगे कीलों को कुरेदती रहती है यह नींद ।

घायल करदेती है हाथों को दर्द महसूस करवाकर,
फिर वापिस आकर आंखों को सुला देती है यह नींद।।

Translation By Suhani Gupta

(Department of Journalism & Mass Communication)